अदृश्य विकलांगताएँ

अर्पिता यादव

क्या आपको फ़िल्म तारे ज़मीन पर याद है? इस फ़िल्म ने लोगों में अधिगम की अक्षमता के बारे में जागरूकता पैदा की और इसने मुझे भी कुछ करने के लिए प्रेरित किया। कई वर्षों तक एक विशेष शिक्षक के रूप में काम करने के बाद मैंने विशिष्ट अधिगम अक्षमता (एसएलडी) पर ध्यान केन्द्रित करने का निर्णय लिया। मैंने यह कोशिश भी की है कि अधिगम की अक्षमता वाले बच्चों के साथ काम करने के अपने अनुभव का उपयोग मैं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और 'अपनी लड़ाई ख़ुद लड़ने' में सक्षम बनाने के लिए करूँ। विशिष्ट अधिगम अक्षमता भावनात्मक अशान्ति, बौद्धिक अक्षमता या संवेदी ख़राबी नहीं है। ये अपर्याप्त पालन-पोषण या शैक्षिक अवसर की कमी के कारण नहीं होतीं।

आइए, हम शुरुआत में यह समझने की कोशिश करें कि एसएलडी क्या हैं और उनसे जुड़े कुछ पहलू कौन-से हैं।

- यह एक तन्त्रिकाजन्य विकार है, जिसका कारण है व्यक्ति के मस्तिष्क में 'तन्त्रिकाओं के तारों के संयोजन' के तरीक़े में अन्तर होना।
- एसएलडी वाले बच्चे अपने साथियों की तरह ही या उनसे अधिक होशियार होते हैं, लेकिन यदि उन्हें चीज़ों को ख़ुद समझना पड़े या पारम्परिक तरीक़ों से सिखाया जाए तो उन्हें पढ़ने, लिखने, वर्तनी, तर्क करने, सूचना को याद करने और/या व्यवस्थित करने में कठिनाई होती है।
- एसएलडी का इलाज नहीं हो सकता या उसे ठीक नहीं किया जा सकता। लेकिन सही समर्थन और हस्तक्षेप के साथ बच्चे स्कूल में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं और अपने करियर में सफल हो सकते हैं।

मोटे तौर पर इन विकारों में एक या अधिक बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं :

1. श्रवण और दृश्य संवेदन (इनपुट)
2. अनुक्रमण, अमूर्तीकरण और व्यवस्थापन (एकीकरण)
3. काम करना, अल्पावधि और दीर्घकालिक स्मरण क्षमता (स्मृति)
4. भावपूर्ण भाषा (आउटपुट) और
5. सूक्ष्म और सकल मोटर कौशल

लक्षण

- पढ़ने की धीमी गति
- जो पढ़ा है उसे समझने और याद रखने में दिक़्क़त
- दिखने/सुनने में समान शब्दों को लेकर भ्रम
- वाक्य संरचना में कठिनाई और ख़राब व्याकरण
- लिखने की धीमी गति और बहुत बड़ा-बड़ा लिखना
- बारम्बार स्पेलिंग की त्रुटियाँ
- तर्कण और अमूर्त अवधारणाओं में दिक़्क़त
- गणित के नियमों को याद रखने में दिक़्क़त
- अंकगणितीय संक्रियाओं को याद करने में कठिनाई
- पाठ के मुख्य विचारों और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को खोजने में कठिनाई
- अक्षरों और गणित के चिह्नों को उलटना
- अच्छी तरह से नोट न ले पाना और उसकी रूपरेखा न बना पाना
- निर्देशों को समझने में कठिनाई
- समय-प्रबन्धन और व्यवस्थापन न कर पाना
- पढ़ाई की शुरुआत करने और उसमें लगे रहने में कठिनाई
- दिए गए समय में काम या असाइनमेंट को पूरा करने की असमर्थता

एसएलडी के प्रकार

श्रवण प्रसंस्करण विकार

श्रवण प्रसंस्करण विकार (एपीडी) एक ऐसी स्थिति है जिसमें कान के माध्यम से आने वाली ध्वनि को मस्तिष्क द्वारा संसाधित करने के तरीक़े पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। एपीडी वाले व्यक्ति शब्दों में ध्वनियों के बीच के सूक्ष्म अन्तर को नहीं पहचानते हैं, भले ही वे ज़ोर-से और स्पष्ट रूप से सुनाई देती हों। उन्हें यह बताने में भी मुश्किल हो सकती है कि ध्वनियाँ

कहाँ से आ रही हैं, वे ध्वनियों के क्रम की समझ नहीं बना पाते या अगर पृष्ठभूमि में शोर हो रहा हो तो वे वहाँ कही जा रही बातों को समझ नहीं पाते। उदाहरण के लिए, एक बच्चा एक शान्त स्थान पर बैठकर अपने आप पढ़ाई कर सकता है लेकिन कक्षा में पाठ को समझना या किसी निर्देश का पालन करना उसके लिए मुश्किल हो सकता है।

श्रवण प्रसंस्करण विकार के प्रकार

- *ऑडिटरी फ़िगर* ग्राउण्ड अर्थात पृष्ठभूमि में शोर होने पर ध्यान दे पाने की असमर्थता। इस केस में शोरगुल से भरी, शिथिल संरचित कक्षाएँ बहुत निराशाजनक हो सकती हैं।
- *ऑडिटरी मेमोरी* अर्थात निर्देश, सूची या अध्ययन-सामग्री जैसी जानकारी को याद रखने में कठिनाई होना। यह तत्काल हो सकता है (मैं इसे अभी याद नहीं कर सकता) और/या देर से (मैं इसे बाद में याद नहीं रख सकता)।
- *ऑडिटरी डिस्क्रिमिनेशन* यानी ऐसे शब्दों या ध्वनियों के बीच अन्तर को सुन पाने में कठिनाई जो एक समान हैं (कोट के लिए बोट, श के लिए च)।
- *ऑडिटरी अटेंशन* यानी कक्षा में ध्यान केन्द्रित करने या किसी कार्य को पूरा करने के लिए लम्बे समय तक सुनने की असमर्थता।
- *ऑडिटरी कोहेशन* यानी बातचीत से निष्कर्ष निकालने, पहेलियों को समझने या मौखिक गणित की समस्याओं को समझने की असमर्थता। इन सभी में उच्च स्तर के श्रवण प्रसंस्करण और भाषा की आवश्यकता होती है।

बच्चे की मदद करना

- जब भी सम्भव हो पृष्ठभूमि का शोर कम करें और यह सुनिश्चित करें कि जब आप बोल रहे हों तो बच्चा आपकी ओर देखे।
- सरल, अर्थवान और भावपूर्ण वाक्यों का उपयोग करें और थोड़ा धीरे-धीरे व कोमल स्वर में बोलें।
- बच्चे से कहें कि वह आपके निर्देश आपके सामने दोहराए। जब तक कार्य पूरा न हो जाए तब तक ज़ोर-ज़ोर से बोलकर उन्हें दोहराता रहे (आपके सामने या ख़ुद अपने लिए)।
- बाद में पूरे करने वाले निर्देशों के लिए नोट्स लिखने, घड़ी पहनने या एक व्यवस्थित घरेलू दिनचर्या बनाए रखने से मदद मिलती है।
- जब ध्यानपूर्वक सुनना आवश्यक हो तो शान्त स्थानों पर जाएँ। उसे घर पर पढ़ने के लिए एक शान्त जगह दें और स्कूल में बैठने की जगह बदलें जैसे कक्षा में आगे या खिड़की की ओर पीठ करके।
- अध्ययन में सहायक चीज़ें जैसे कि टेप रिकार्डर, एपीडी वाले बच्चों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए ऑनलाइन नोट्स आदि सीखने में मदद करेंगे।
- उसे नियमित रूप से ऐसे काम सौंपें जो उसके लिए सम्भव हों, जैसे अपने कमरे और डेस्क को साफ़-सुथरा रखना।

गणना अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया)

गणना अक्षमता अधिगम की एक विशिष्ट अक्षमता है जो किसी व्यक्ति की संख्या को समझने और गणित के नियमों को सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। इस प्रकार के एसएलडी वाले लोगों में चिह्नों के बारे में अच्छी समझ नहीं होती; उन्हें संख्याओं को याद रखने और व्यवस्थित करने में मुश्किल होती है; समय बताने में कठिनाई होती है या गिनने में परेशानी होती है।

गणना अक्षमता के प्रकार

- मौखिक गणना अक्षमता एक ऐसी समस्या है जिसमें बच्चा संख्याएँ पढ़ या लिख सकता है, लेकिन मौखिक रूप से प्रस्तुत किए जाने पर उन्हें पहचानने में उसे कठिनाई होती है।
- प्रैक्टोग्नॉस्टिक गणना अक्षमता तब होती है जब बच्चा गणितीय अवधारणाओं को कुशलतापूर्वक प्रयोग करने में कठिनाई का अनुभव करता है, जैसे कि वस्तुओं की तुलना करना (बड़ा, छोटा)।
- लेक्सिकल गणना अक्षमता एक ऐसी समस्या है जिसमें बच्चे को अंक और गणितीय चिह्नों (+ और -) को पढ़ने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- ग्राफिकल गणना अक्षमता तब होती है जब बच्चे को अवधारणाओं को समझने के बाद भी सही चिह्नों को पढ़ने, लिखने और उपयोग करने में कठिनाई होती है।
- आइडिओग्नॉस्टिकल गणना अक्षमता में बच्चे को गणितीय चिह्नों और उनके सम्बन्धों को जोड़ने में कठिनाई होती है।
- ऑपरेशनल गणना अक्षमता में बच्चे को अंकगणितीय संक्रियाओं को करने में कठिनाई होती है।

बच्चे की मदद करना

- एक साथ खाना बनाना : माता-पिता और बच्चे एक व्यंजन विधि चुन सकते हैं, सूची बना सकते हैं और बच्चे को आवश्यक सामग्री लाने के लिए कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, 1 किलो फूलगोभी, 3 गाजर, 2 प्याज़, शिमला मिर्च के 6 टुकड़े या सब्ज़ियों को 5 टुकड़ों में काटना।

- घड़ी के साथ खेलना : बच्चे से कहें कि वह एक निश्चित समय होने पर आपको बताए। फिर आप उसकी प्रशंसा करते हुए उससे कहें कि उसने कितना अच्छा काम किया है और वह कितना ज़िम्मेदार और बड़ा हो गया है।
- सामान खरीदना : बच्चे को ख़ुद चीज़ें खरीदने की ज़िम्मेदारी देने और पर्स में पैसे की जाँच करने से उसे संख्याओं से सम्बन्धित कुछ अवधारणाओं को समझने में मदद मिल सकती है।
- गिनती करना : वह रास्ते में दिखाई देने वाली कारों, लोगों, सफेद (या कोई भी अन्य रंग) जूते पहने हुए लोगों या चढ़ते समय सीढ़ियों को गिन सकता है।
- टेलीफोन नम्बर याद रखना : बच्चा दादी के फोन नम्बर के पहले तीन अंकों को याद कर सकता है और बाक़ी के नम्बर घर का कोई बड़ा व्यक्ति बता सकता है। एक साथ मिलकर फोन करें और अगर वह इसे अच्छी तरह से करे तो उसकी तारीफ़ करें।
- दुकानें : बच्चा एक ऐसे स्टोर में क्लर्क के समान कार्य कर सकता है, जिसमें घर और स्कूल की चीज़ों की 'सेल' लगी है। हर चीज़ का एक निर्धारित 'मूल्य' है। शिक्षक और सहपाठी (स्कूल में) तथा माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य (घर पर) ग्राहक हैं। यह खेल मात्रा, जोड़, घटाव और पैसे के प्रबन्धन के लिए एक अच्छा अभ्यास है।

लेखन विकार (डिसग्राफिया)

लेखन विकार अधिगम की एक विशिष्ट अक्षमता है जो किसी व्यक्ति की लिखने की क्षमता और सूक्ष्म मोटर कौशल को प्रभावित करती है। इसकी समस्याओं में अपठनीय लिखावट, असंगत अन्तरण, काग़ज़ पर ख़राब स्थानिक योजना, ख़राब वर्तनी और लिखते समय अक्षरयोजन के अलावा एक ही समय में सोचने और लिखने में कठिनाई आदि बातें हो सकती हैं।

लक्षण

- अपर केस/लोअर केस अक्षरों का मिश्रण, अनियमित आकार और आकृतियाँ, अधूरे अक्षर, ग़लत पकड़ जिसके परिणामस्वरूप अपठनीयता।
- लेखन कार्य को पूरा करने की अनिच्छा या इन्कार, लेखन में असमर्थता या धीमेपन से हताशा के कारण रोना और तनाव, लिखते समय स्वयं से बातें करना।

एक विद्यार्थी के विचार

लिखना निश्चित रूप से सबसे बुरा काम है। मुझे उन सभी चीज़ों को याद रखने में बहुत मुश्किल होती है जिन्हें मुझे याद रखना चाहिए, जैसे पूर्ण विराम और कैपिटल लेटर्स। जब मैं कहानी के बारे में सोचने की कोशिश कर रहा होता हूँ तो फिर यह सोचना लगभग असम्भव है कि शब्दों की स्पेलिंग कैसे लिखूँ। यह याद रखना बहुत मुश्किल है कि मैं क्या लिख रहा हूँ... मैं तय करता हूँ कि सिर्फ़ कुछ वाक्य लिखना आसान है। इससे मेरे हाथ में इतना दर्द नहीं होता। पिछले स्कूल में मेरे शिक्षक शिकायत करते थे, लेकिन मैं बस बहुत छोटी कहानियाँ लिखता रहता हूँ। उन्हें यह समझ में नहीं आता कि संघर्ष करना और लिखने के लिए संघर्ष करना कैसा होता है और फिर भी काग़ज़ गन्दा और ग़लतियों से भरा हुआ होता है। वे हमेशा मुझे बताते हैं कि मेरे पेपर कितने गन्दे हैं। वे समझ ही नहीं पाते कि मैं कितनी कोशिश करता हूँ। मैं कितनी भी सावधानी से काम क्यों न करूँ, मेरे शब्द अन्य बच्चों के शब्दों के जैसे नहीं दिखते हैं। कभी-कभी मुझे पता होता है कि मैं शब्दों को कैसा देखना चाहता हूँ लेकिन ऐसा हो ही नहीं पाता है।

वैसे यह विद्यार्थी प्रतिभाशाली है : उसका बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा और उसकी मौखिक अभिव्यक्ति तथा पढ़ना भी उत्कृष्ट है। वह कम्प्यूटर पर कार्य करने में बहुत अच्छा है, लेकिन वह लिखने के लिए संघर्ष करता है।

लेखन विकार के प्रकार

- *डिस्लेक्सिक लेखन विकार* के कारण अनायास या बिना पूर्व तैयारी के लिखा गया लेखन अपठनीय होता है, नक़ल किया गया काम अच्छा होता है और स्पेलिंग ख़राब होती हैं।
- *मोटर लेखन विकार* सूक्ष्म मोटर कौशल की कमी, अपर्याप्त निपुणता, मांसपेशियों की ख़राब टोन और/या अनिर्दिष्ट मोटर बेढंगेपन के कारण होता है। आमतौर पर लिखित कार्य पठनीय नहीं होता, भले ही किसी अन्य लेखन को देखकर उसकी नक़ल की गई हो और एक छोटे-से अनुच्छेद को लिखने में भी अत्यधिक प्रयास की आवश्यकता होती है।
- *स्थानिक लेखन विकार* यानी स्थान की समझ में कठिनाई होना। इसमें बच्चे को दी गई रेखाओं पर लिखने और शब्दों के बीच अन्तर रखने में परेशानी होती है।
- *फोनोलॉजिकल या ध्वन्यात्मक लेखन* विकार में लिखने और स्पेलिंग की गड़बड़ियाँ होती हैं जिसमें अपरिचित शब्दों, ग़ैर-शब्दों (ग़ैर-शब्द यानी अक्षरों या ध्वनियों का ऐसा समूह जो देखने-सुनने में शब्द जैसा लगता है, पर मूलत: उस भाषा को बोलने वाले लोगों द्वारा स्वीकृत नहीं होता। हो सकता है कि किसी और भाषा में उसे सार्थक

शब्द माना जाता हो। - सम्पादक) और ध्वन्यात्मक रूप से अनियमित शब्दों की स्पेलिंग बिगड़ जाती हैं।

- लेक्सिकल लेखन विकार तब होता है जब बच्चा स्पेलिंग बता सकता है लेकिन वह अनियमित शब्दों की ग़लत स्पेलिंग के मामले में मानक 'ध्वनि-से-अक्षर' वाले पैटर्न पर निर्भर करता है। यह ध्वन्यात्मक भारतीय भाषाओं की तुलना में ग़ैर-ध्वन्यात्मक भाषाओं, जैसे अंग्रेज़ी और फ्रेंच, में अधिक आम है।

बच्चे की मदद करना

- अक्षरों को महसूस करना : बच्चे की मदद करें कि उसका ध्यान महसूस करने पर केन्द्रित हो, देखने पर नहीं। बच्चे की पीठ पर या उसकी हथेली पर किसी अक्षर को लिखकर बताएँ कि उसे कैसे बनाया जाता है। फिर देखें कि क्या वह उस अक्षर को काग़ज़ पर लिख सकता है।
- बड़ा-बड़ा लिखना : इस लेखन विकार में बच्चा यह भूल जाता है कि अक्षर कैसे बनते हैं। बहुसंवेदी सामग्रियों का उपयोग करके बड़े अक्षर बनाने से मदद मिल सकती है।
- मिट्टी का उपयोग करना : गीली मिट्टी को बेलनाकार देकर उनसे अक्षर बनाने से हाथ की ताक़त बढ़ती है और यह आकृतियों की स्मृति को मज़बूत करते हुए सूक्ष्म मोटर कौशल को बढ़ाता है।
- तोड़कर लिखना। पॉवर (acronym)! यह मुख्य शब्द है-

  P - (प्रिपेर) तैयार करें, अपने सभी विचारों को सूचीबद्ध करें

  O - (ऑर्गनाइज़) उन्हें व्यवस्थित और इकट्ठा करें

  W - (राइट) मसौदा लिखें

  E - (एडिट) सम्पादित करें, त्रुटि को तलाशें और सुधारें

  R – (रिवाइज़) संशोधित करें, अन्तिम मसौदा लिखें

यह तरीक़ा बड़े बच्चों के साथ बहुत कारगर होता है और वे इसे आसानी से सीखते हैं। कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी इस रणनीति को क्रियान्वित करने में बच्चे की मदद करते हैं।

डिस्लेक्सिया

एक विशिष्ट अधिगम विकलांगता जो पढ़ने और सम्बन्धित भाषा-आधारित प्रसंस्करण कौशल को प्रभावित करती है। यह पढ़ने के प्रवाह, डी-कोडिंग, पढ़ने की समझ, स्मरण, लेखन, स्पेलिंग और कभी-कभी बोलने को प्रभावित कर सकती है। इसकी गम्भीरता प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग हो सकती है और इसके साथ अन्य सम्बन्धित विकार (सह-अस्वस्थता) भी हो सकते हैं।

लक्षण

- बच्चा होनहार, अत्यधिक बुद्धिमान और सुवक्ता दिखाई देता है, लेकिन कक्षा के स्तर पर पढ़ने, लिखने या स्पेलिंग बताने में असमर्थ होता है और इसलिए उस पर आलसी, लापरवाह और पर्याप्त प्रयास नहीं करने वाले का लेबल लगा दिया जाता है।
- बच्चे का बौद्धिक स्तर उच्च होता है, लेकिन उसे टेस्ट और परीक्षाएँ पसन्द नहीं होतीं। इससे उसका आत्मसम्मान कम हो जाता है, भले ही बच्चे में कला, नाटक, खेल, डिज़ाइनिंग, व्यवसाय जैसी विविध प्रतिभाएँ हों।
- ध्यान लगाए रखने में कठिनाई होती है : वह अतिसक्रिय या स्वप्नदृष्टा लगता है।
- व्यावहारिक व क्रियाशील अनुभवों, प्रदर्शन, प्रयोग, अवलोकन और दृश्य सहायक सामग्री के माध्यम से वह अच्छी तरह से सीखता है।
- आकृति में समान अक्षर— d, p, q, g —उसे भ्रमित करते हैं। उसे bird शब्द drib जैसा दिख सकता है।
- ज़ोर-से पढ़ने से अत्यधिक तनाव पैदा होता है चूँकि अक्षर और उनकी ध्वनियाँ सह-सम्बन्धित नहीं हैं, इसलिए एक ही पंक्ति या अनुच्छेद को बार-बार पढ़ा जाता है।

डिस्लेक्सिया के प्रकार

- *ध्वन्यात्मक* : बच्चे को भाषा की ध्वनियों को तोड़ने और लिखित प्रतीकों के साथ उन ध्वनियों के मिलान में परेशानी होती है। ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण की चुनौतियाँ शब्दों को डिकोड करना कठिन बनाती हैं।
- *सरफेस डिस्लेक्सिया* : बच्चा नए शब्दों को बोल सकता है, लेकिन आम शब्दों को देखकर पहचानने में जूझता है। weight या debt जैसे शब्द, जिनकी ध्वनियाँ अपनी स्पेलिंग से अलग हैं, उसके लिए मुश्किल होते हैं।
- *रैपिड-नेमिंग डेफिसिट* : डिस्लेक्सिया वाले कई बच्चों को चीज़ें देखते ही जल्दी से उनके नाम बताने में परेशानी होती है जैसे कि अक्षर, संख्याएँ और रंग।

बच्चे की मदद करना

- पढ़ना : बच्चे को ज़ोर-से पढ़कर सुनाएँ। उसे सब कुछ पढ़ने दें। एक छोटा अनुच्छेद कई बार पढ़ा जा सकता है।
- शब्दावली : बच्चे से कहें कि वह माता-पिता/शिक्षक को हर दिन एक ऐसा नया शब्द बताए जो उसने उस दिन सीखा है। उसके मतलब के बारे में बात करें, उसे शब्दकोश में देखें और उस शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँ।

- खेल : एक शब्द में जितने अक्षर हैं उतनी तालियाँ बजाकर बच्चे को सुनाएँ, शब्द की ध्वनियों को तोड़ें और उन्हें वापस एक साथ मिलाएँ, गानों, कविताओं और बालगीतों में आए अनुप्रासों की ओर बच्चे का ध्यान आकर्षित करें। कम्प्यूटर के संसाधनों जैसे ऐप, डिजिटल लर्निंग गेम और लर्निंग गेम्स वाली वेबसाइट का उपयोग करें।
- पूर्व-शिक्षण को प्रोत्साहित करें : पाठ पढ़ने से पहले हर बात को वास्तविक अनुभवों से जोड़ें। दृश्य-सामग्री, खिलौने, सामान्य घरेलू सामान, फील्ड ट्रिप आदि के साथ सामान्यीकरण करें।

भाषा प्रसंस्करण विकार

एक विशिष्ट प्रकार का श्रवण प्रसंस्करण विकार (एपीडी) जिसमें शब्दों, वाक्यों और कहानियों को बनाने वाले ध्वनि समूहों को अर्थ के साथ जोड़ने में कठिनाई होती है। एलपीडी अभिव्यक्ति की भाषा और/या ग्रहणशील भाषा को प्रभावित कर सकता है।

लक्षण

- बच्चे को पाठ्य का अर्थ समझते हुए पढ़ने में कठिनाई होती है।
- विचारों को मौखिक रूप में व्यक्त करने में कठिनाई होती है।
- वस्तुओं को लेबल करने या लेबल को पहचानने में कठिनाई होती है।
- कहने को बहुत कुछ होने पर भी न कह पाने के कारण वह अकसर बहुत निराश हो जाता है।
- उसे लगता है कि शब्द उसकी ज़बान पर हैं लेकिन उन्हें कहने में वह असमर्थ होता है।
- वह निराश हो सकता है या उदासी की भावना से घिरा हो सकता है।
- चुटकुलों को समझने में कठिनाई होती है।

अभिव्यंजक या भावपूर्ण भाषा विकार

इसमें आमतौर पर आयु विशेष के हिसाब से शब्दावली का ज्ञान काफ़ी कम होता है, इसलिए बच्चे के लिए सही नाम से चीज़ों की माँग करना बहुत मुश्किल होता है। व्याकरण के नियमों का पालन करने में भी कठिनाई होती है, जिसके परिणामस्वरूप जटिल वाक्यों का उपयोग करने में असमर्थता होती है।

चुनौतियाँ

- बच्चा जिस वस्तु को पहचानने की कोशिश कर रहा होता है उस वस्तु विशेष के लिए उससे जुड़े वर्णनात्मक शब्दों का उपयोग कर सकता है, लेकिन उसका नाम बताने में उसे कठिनाई होती है।
- समान अर्थ वाले शब्दों का ग़लत उपयोग, उदाहरण के लिए I need socks in my feet के स्थान पर I need socks on my feet का प्रयोग।
- रचनात्मक या मौलिक भाषा का उपयोग करने में कठिनाई : किसी विषय पर इधर-उधर की बातें करना या घुमा-फिराकर बातें करना।
- पूरकों या फिलर्स का उपयोग करना :*हम्म्म* या *यू नो* का अत्यधिक उपयोग करना ताकि उसे थोड़ा समय मिल जाए और कोशिश करके उन शब्दों को बोल सके जिन्हें वह बोलना चाहता है।
- अनावश्यक बहुशब्द प्रयोग : सामान्य प्रश्नों के उत्तर के लिए बच्चे को दो से चार सैकेण्ड का समय लगता है। इसे *प्रतिक्रिया विलम्बता समय* कहा जाता है। 'मैं भूल गया' या 'मैं नहीं जानता' का प्रयोग करके बच्चा अकसर वाक्य को बनाने के लिए अतिरिक्त समय पाने का प्रयास करता है।
- स्वयं से बात करना, पूर्वाभ्यास करना : अपनी कमज़ोर अल्पकालिक स्मृति की क्षतिपूर्ति में मदद करने के लिए बार-बार प्राप्त जानकारी को दोहराना।
- सीखने में असंगतता : जानकारी प्राप्त करने और उसे समझने के लिए कई अलग-अलग प्रकार के इनपुट की आवश्यकता होना।
- वह त्रुटियों की पहचान कर सकता है, लेकिन उन्हें ठीक करने में सक्षम नहीं होता : यह समझना कि कोई त्रुटि हुई है, लेकिन यह पता न होना कि इसे कैसे ठीक किया जाए।
- बच्चा वाक्य या विचार समाप्त नहीं करता है : बातचीत असम्बद्ध और अपूर्ण लग सकती है, अगर सन्दर्भ न हो तो उसके सन्देश को समझना मुश्किल हो जाता है।
- सामाजिक कौशल सम्बन्धी कठिनाइयाँ और समस्याग्रस्त व्यवहार : सामाजिक कौशल को लेकर समस्याएँ क्योंकि अन्य लोग उसे नहीं समझते हैं।
- आयु-उपयुक्त बौद्धिक स्तर लेकिन अकादमिक कठिनाइयाँ : जब शैक्षिक माँग बढ़ती है तो भाषा प्रसंस्करण की कमी के कारण उसके सीखने की मात्रा और गति प्रभावित हो सकती है।

बच्चे की मदद करना

- धीरे और स्पष्ट रूप से बोलें तथा जानकारी को सम्प्रेषित करने के लिए सरल वाक्यों का उपयोग करें एवं मुख्य अवधारणाओं को बोर्ड पर लिखें।

- नोट्स लिखने के लिए टेप रिकॉर्डर का उपयोग करने दें।
- व्यक्तिगत सहायक या सहकर्मी ट्यूटर की व्यवस्था करें।
- सुनने और समझने के संवर्धन के लिए विज़ुअलाइज़ेशन तकनीकों का और नोट्स लिखने के लिए ग्राफिक आयोजकों का उपयोग करें।
- छोटे-छोटे टुकड़ों में सरल, सीधे और व्यक्तिगत निर्देश दें और निर्देश देने से पहले बच्चे का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करें और बच्चे का चेहरा देखते हुए स्पष्ट रूप से बोलें।
- सूचना को संसाधित करने और समझने के लिए अतिरिक्त समय दें।
- बच्चे को सुनी हुई बात दोहराने के लिए कहें। इससे वक्ता को त्रुटियों की पहचान करने और बच्चे को उन्हें सुधारने में मदद मिलती है।
- घर और स्कूल दोनों में ऐसी दिनचर्या रखें जिसके बारे में बच्चे को पहले से पता हो या जो उसके लिए अपेक्षित हो।

लर्निंग एस्पिरेशन की अन्य रणनीतियाँ

जब बच्चा इनमें से किसी भी चुनौती का सामना करता है तो उसे अकसर आलसी और दिलचस्पी न लेने वाला कहा जाता है, भले ही वह बच्चा किसी अन्य क्षेत्र में बहुत अच्छा हो। इसके परिणामस्वरूप उसका आत्मसम्मान कम हो सकता है।

लर्निंग एस्पिरेशन में हम उन रणनीतियों का उपयोग करते हैं जो बच्चों को दिलचस्प काम करने के अवसर दें। यह कोई खेल या नृत्य या थिएटर या कला व क्राफ्ट के रूप में हो सकती हैं जो हमारी शिक्षण की विधियों का हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए तितली का जीवन-चक्र क्राफ्ट की गतिविधियों की मदद से सिखाया जाता है। मुगल इतिहास को रंगमंच के माध्यम से पढ़ाया जाता है। हम हिन्दी कहानी सुनाने के लिए कठपुतलियों और व्याकरण पढ़ाने के लिए गीत-संगीत का उपयोग करते हैं। बोर्ड गेम और कार्ड गेम हमारे यहाँ बहुत लोकप्रिय हैं और सफलतापूर्वक उपयोग में लाए जाते हैं। *लर्निंग एस्पिरेशन* में करके सीखना शिक्षण का आधार है।

प्रदर्शन कला और खेलकूद से बच्चे को इस प्रकार के कई फ़ायदे होते हैं। लाभ की यह सूची अन्तहीन हो सकती है। और हमने अपने विद्यार्थियों के शैक्षिक अधिगम के क्षेत्र में चमत्कारी बदलाव देखे हैं।

हमारा मानना है कि एसएलडी वाले बच्चे अपने जीवन को बढ़िया तरीक़े से आगे बढ़ा सकते हैं। उन्हें अपनी चुनौतियों पर विजय पाने के लिए अपनी ताक़त का इस्तेमाल करने के लिए एक उपयुक्त और समृद्ध वातावरण की आवश्यकता होती है।



अर्पिता यादव बहुविकलांगता वाले एक किशोर बच्चे की माँ हैं। उन्होंने दिल्ली में विशेष-शिक्षा का अध्ययन किया और वे सीखने के प्राकृतिक तथा समग्र तरीक़े में विश्वास करती हैं, जहाँ प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमताओं और गति के अनुसार सीख सके। वे अधिगम की अक्षमता वाले बच्चों के एक विद्यालय *लर्निंग एस्पिरेशन* में शैक्षिक निदेशक हैं, जिसका उद्देश्य उन विद्यार्थियों को एक समृद्ध वातावरण प्रदान करना है जिन्हें मुख्यधारा की स्कूल प्रणाली कठिन लगती है। उनसे arpita34@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल